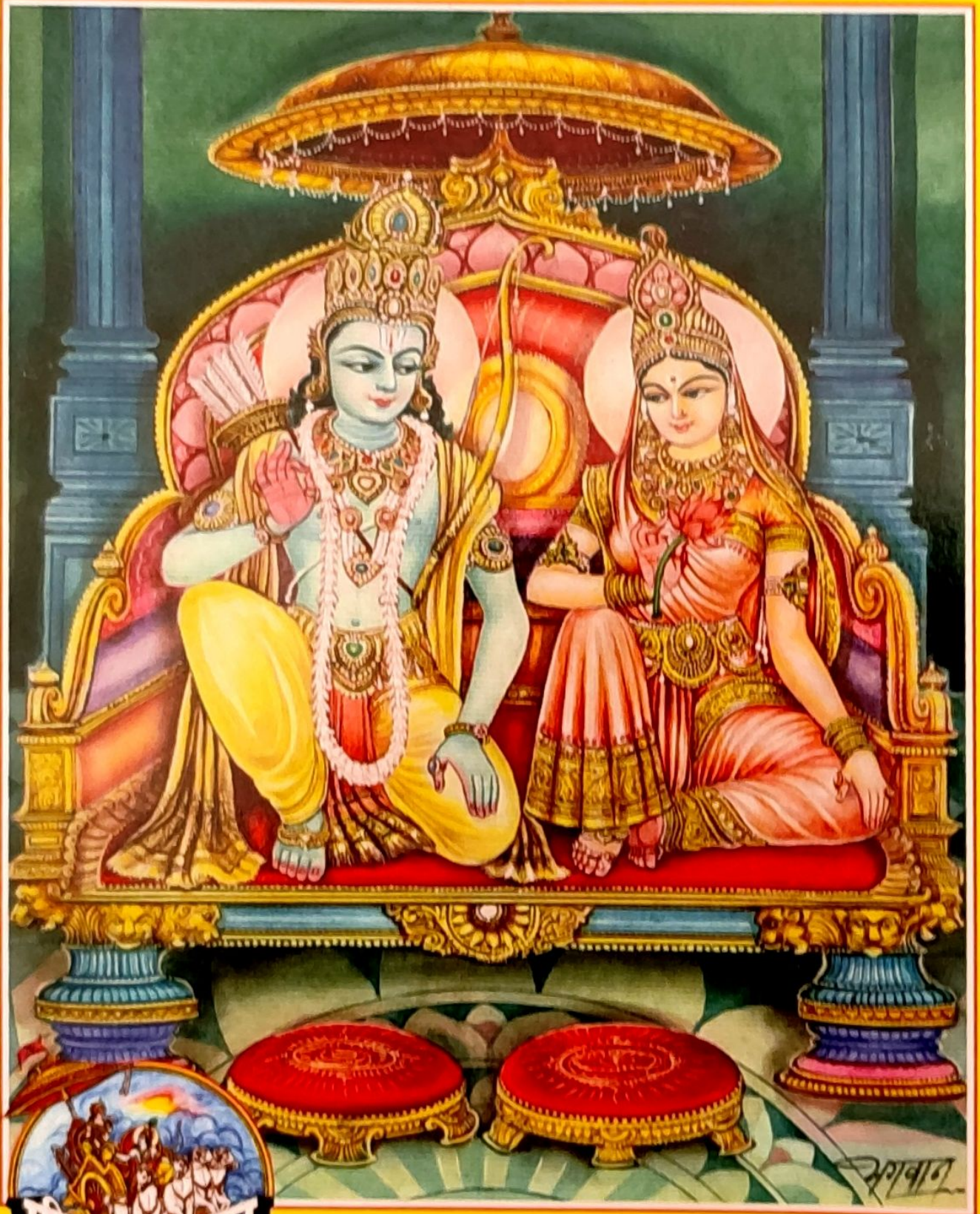


# आरती-संग्रह



गीताप्रेस गोरखपुर  
GITA PRESS, GORAKHPUR

गीताप्रेस, गोरखपुर

॥ श्रीहरिः ॥

# आरती-संग्रह

---

त्वमेव माता च पिता त्वमेव  
 त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव ।  
 त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव  
 त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥

---



---

सम्पादक—हनुमानप्रसाद पोद्दार

---

सं० २०७५ अस्सीवाँ पुनर्मुद्रण १०,०००  
कुल मुद्रण २०,१८,०००

❖ मूल्य—₹ १०  
( दस रुपये )

प्रकाशक एवं मुद्रक—

गीताप्रेस, गोरखपुर—२७३००५

( गोबिन्दभवन-कार्यालय, कोलकाता का संस्थान )

फोन : ( ०५५१ ) २३३४७२१, २३३१२५०, २३३१२५१

web : [gitapress.org](http://gitapress.org) e-mail : [booksales@gitapress.org](mailto:booksales@gitapress.org)

गीताप्रेस प्रकाशन [gitapressbookshop.in](http://gitapressbookshop.in) से online खरीदें।

॥ श्रीहरिः ॥

## नम्र निवेदन

संस्कृत और हिंदीमें आरतीके अनेक पद प्रचलित हैं। इन प्रचलित पदोंमें कुछ तो बहुत ही सुन्दर और शुद्ध हैं, कुछमें भाषा तथा कविताकी दृष्टिसे न्यूनाधिक भूलें हैं, परंतु भाव सुन्दर हैं तथा उनका पर्याप्त प्रचार है। अतः उनमेंसे कुछका आवश्यक सुधारके साथ इसमें संग्रह किया गया है। नये पद भी बहुत-से हैं। पूजा करनेवालोंको इस संग्रहसे सुविधा होगी, इसी हेतुसे यह प्रयास किया गया है। इसमें भगवान्‌के कई स्वरूपों तथा देवताओंकी आरतीके पद हैं। आशा है, जनता इससे लाभ उठायेगी।

—हनुमानप्रसाद पोद्दार



॥ श्रीहरिः ॥

## विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या	विषय	पृष्ठ-संख्या
१- वैदिक आरती	..... ९	२५- श्रीराम-लक्ष्मण	..... २१
२- श्रीगणपति-वन्दन	..... ९	२६- सिंहासनासीन भगवान्	
३- भगवान् श्रीगणपतिजी	..... ९	श्रीरामचन्द्र	..... २२
४- भगवान् श्रीगणेशजी	..... १०	२७- भगवान् श्रीसीतारामजी	..... २२
५- भगवान् श्रीगणेशजी	..... ११	२८- भगवान् श्रीसीताराम	..... २२
६- सर्वरूप हरि-वन्दन	..... ११	२९- भगवान् श्रीसीताराम	..... २३
७- सर्वरूप भगवान्	..... ११	३०- भगवान् श्रीसीताराम	..... २३
८- भगवान् जगदीश्वर	..... १२	३१- भगवान् श्रीसीताराम	..... २४
९- भगवान् ब्रह्मा, विष्णु, महेश	..... १२	३२- भगवान् श्रीसीताराम	..... २४
१०- पंचायतन	..... १३	३३- भगवान् श्रीराघवजी	..... २४
११- श्रीविष्णु-वन्दना	..... १४	३४- भगवान् श्रीजानकीनाथ	..... २५
१२- भगवान् श्रीसत्यनारायणजी	१४	३५- श्रीजानकी-वन्दन	..... २५
१३- भगवान् श्रीलक्ष्मीनारायणजी	१५	३६- श्रीजानकीजी	..... २५
१४- श्रीलक्ष्मी-वन्दना	..... १५	३७- श्रीजानकीजी	..... २६
१५- श्रीलक्ष्मीजी	..... १६	३८- श्रीजानकीजी	..... २६
१६- श्रीदशावताररूप हरि-वन्दना	१६	३९- श्रीभरतजी	..... २७
१७- श्रीदशावतार	..... १६	४०- श्रीकृष्ण-वन्दन	..... २७
१८- श्रीराम-वन्दना	..... १८	४१- भगवान् श्रीगोपालजी	..... २७
१९- भगवान् श्रीराम	..... १८	४२- भगवान् श्रीब्रजराज	..... २८
२०- भगवान् श्रीरामचन्द्र	..... १९	४३- भगवान् श्रीकृष्ण	..... २९
२१- भगवान् श्रीरामचन्द्र	..... १९	४४- भगवान् नटवर	..... ३०
२२- भगवान् श्रीराम रघुवीर	..... १९	४५- भगवान् श्यामसुन्दर	..... ३१
२३- भगवान् श्रीराम	..... २०	४६- भगवान् नन्दकिशोर	..... ३१
२४- भगवान् मर्यादापुरुषोत्तम	..... २१	४७- भगवान् श्रीकृष्ण	..... ३१
		४८- भगवान् श्रीगिरिधारी	..... ३३

विषय	पृष्ठ-संख्या
४९- भगवान् श्रीगिरिधारी	..... ३३
५०- भगवान् यशोदालाल	..... ३४
५१- भगवान् मुरलीधर	..... ३४
५२- भगवान् कुंजबिहारी	..... ३४
५३- भगवान् कुंजबिहारी	..... ३४
५४- भगवान् राधा-कृष्ण	..... ३५
५५- भगवान् राधिकानाथ	..... ३५
५६- भगवान् युगलकिशोर	..... ३६
५७- भगवान् श्रीव्रजनन्दन	..... ३६
५८- भगवान् श्रीगोपालजी	..... ३६
५९- भगवान् श्रीराधा-कृष्ण	..... ३७
६०- श्रीराधिका-वन्दन	..... ३९
६१- श्रीराधाजी	..... ३९
६२- श्रीराधिकाजी	..... ३९
६३- भगवान् शंकर	..... ४०
६४- भगवान् गंगाधर	..... ४०
६५- भगवान् महादेव	..... ४१
६६- भगवान् श्रीशिवशंकर	..... ४२
६७- भगवान् श्रीशंकर	..... ४३
६८- भगवान् कैलासवासी	..... ४३
६९- भगवान् श्रीभोलेनाथजी	..... ४४
७०- श्रीदेवी-वन्दना	..... ४६
७१- श्रीदेवीजी	..... ४६
७२- श्रीदेवीजी	..... ४७
७३- श्रीदुर्गाजी	..... ४७
७४- श्रीअम्बाजी	..... ४८
७५- श्रीदेवीजी	..... ४९

विषय	पृष्ठ-संख्या
७६- श्रीज्वाला-काली देवीजी	..... ५०
७७- श्रीपर्वतवासिनी ज्वालाजी	..... ५१
७८- श्रीसूर्य-वन्दना	..... ५१
७९- भगवान् सूर्य	..... ५१
८०- श्रीहनुमत्-वन्दन	..... ५२
८१- श्रीहनुमान्जी	..... ५२
८२- श्रीहनुमान्जी	..... ५३
८३- श्रीहनुमान्जी	..... ५३
८४- श्रीअंजनीकुमारजी	..... ५३
८५- श्रीहनुमान्ललाजी	..... ५४
८६- श्रीगंगा-वन्दन	..... ५४
८७- श्रीगंगाजी	..... ५५
८८- श्रीगंगाजी	..... ५५
८९- श्रीगंगाजी	..... ५६
९०- श्रीयमुना-वन्दन	..... ५६
९१- श्रीयमुनाजी	..... ५६
९२- श्रीनर्मदाजी	..... ५७
९३- भगवान् श्रीबदरीनाथजी	..... ५७
९४- श्रीबदरीनाथ-स्तुति	..... ५८
९५- श्रीबदरीनाथ-महिमा	..... ५८
९६- श्रीबदरीनाथाष्टकम्	..... ५९
९७- श्रीगोमाता	..... ६०
९८- श्रीमद्भागवत	..... ६०
९९- श्रीमद्भगवद्गीता	..... ६१
१००- श्रीमद्भगवद्गीता	..... ६२
१०१- श्रीमद्भगवद्गीता	..... ६३
१०२- श्रीरामायणजी	..... ६४

## आरती क्या है और कैसे करनी चाहिये ?

आरतीको 'आरात्रिक' अथवा 'आरात्रिक' और 'नीराजन' भी कहते हैं। पूजाके अन्तमें आरती की जाती है। पूजनमें जो त्रुटि रह जाती है, आरतीसे उसकी पूर्ति होती है। स्कन्दपुराणमें कहा गया है—

मन्त्रहीनं क्रियाहीनं यत् कृतं पूजनं हरेः।

सर्वं सम्पूर्णतामेति कृते नीराजने शिवे॥

‘पूजन मन्त्रहीन और क्रियाहीन होनेपर भी नीराजन (आरती) कर लेनेसे उसमें सारी पूर्णता आ जाती है।’

आरती करनेका ही नहीं, आरती देखनेका भी बड़ा पुण्य लिखा है। हरिभक्तिविलासमें एक श्लोक है—

नीराजनं च यः पश्येद् देवदेवस्य चक्रिणः।

सप्तजन्मनि विप्रः स्यादन्ते च परमं पदम्॥

‘जो देवदेव चक्रधारी श्रीविष्णुभगवान्की आरती (सदा) देखता है, वह सात जन्मोंतक ब्राह्मण होकर अन्तमें परमपदको प्राप्त होता है।’

विष्णुधर्मोत्तरमें आया है—

धूपं चारात्रिकं पश्येत् कराभ्यां च प्रवन्दते।

कुलकोटिं समुद्धृत्य याति विष्णोः परं पदम्॥

‘जो धूप और आरतीको देखता है और दोनों हाथोंसे आरती लेता है, वह करोड़ पीढ़ियोंका उद्धार करता है और भगवान् विष्णुके परमपदको प्राप्त होता है।’

आरतीमें पहले मूलमन्त्र (जिस देवताका जिस मन्त्रसे पूजन किया गया हो, उस मन्त्र) के द्वारा तीन बार पुष्पांजलि देनी चाहिये और ढोल, नगारे, शंख, घड़ियाल आदि महावाद्योंके तथा जय-जयकारके शब्दके साथ शुभ पात्रमें घृतसे या कपूरसे विषम संख्याकी अनेक बत्तियाँ जलाकर आरती करनी चाहिये—

ततश्च मूलमन्त्रेण दत्त्वा पुष्पाञ्जलित्रयम्।  
 महानीराजनं कुर्यान्महावाद्यजयस्वनैः॥  
 प्रज्वलयेत् तदर्थं च कर्पूरेण घृतेन वा।  
 आरार्तिकं शुभे पात्रे विषमानेकवर्तिकम्॥

साधारणतः पाँच बत्तियोंसे आरती की जाती है, इसे 'पंचप्रदीप' भी कहते हैं। एक, सात या उससे भी अधिक बत्तियोंसे आरती की जाती है। कपूरसे भी आरती होती है। पद्मपुराणमें आया है—

कुङ्कुमागुरुकर्पूरघृतचन्दननिर्मिताः ।  
 वर्तिकाः सप्त वा पञ्च कृत्वा वा दीपवर्तिकाम्॥  
 कुर्यात् सप्तप्रदीपेन शङ्खघण्टादिवाद्यकैः।

‘कुङ्कुम, अगर, कपूर, घृत और चन्दनकी सात या पाँच बत्तियाँ बनाकर अथवा दियेकी (रूई और घीकी) बत्तियाँ बनाकर सात बत्तियोंसे शंख, घण्टा आदि बाजे बजाते हुए आरती करनी चाहिये।’

आरतीके पाँच अंग होते हैं—

पञ्च नीराजनं कुर्यात् प्रथमं दीपमालया।  
 द्वितीयं सोदकाब्जेन तृतीयं धौतवाससा॥  
 चूताश्वत्थादिपत्रैश्च चतुर्थं परिकीर्तितम्।  
 पञ्चमं प्रणिपातेन साष्टाङ्गेन यथाविधि॥

‘प्रथम दीपमालाके द्वारा, दूसरे जलयुक्त शंखसे, तीसरे धुले हुए वस्त्रसे, चौथे आम और पीपल आदिके पत्तोंसे और पाँचवें साष्टांग दण्डवत्से आरती करे।’

‘आरती उतारते समय सर्वप्रथम भगवान्की प्रतिमाके चरणोंमें उसे























































































मैं जानूँ तुम सदगुणसागर अवगुण मेरे सब हरियो।  
किंकरकी विनती सुन स्वामी सब अपराध क्षमा करियो॥  
तुम तो सकल विश्वके स्वामी मैं हूँ प्राणी संसारी॥  
भोलेनाथ०

काम-क्रोध-लोभ अति दारुण इनसे मेरो वश नहीं।  
द्रोह-मोह-मद संग न छोड़ै आन देत नहिं तुम ताँई॥  
क्षुधा-तृषा नित लगी रहत है बढ़ी विषय तृष्णा भारी॥  
भोलेनाथ०

तुम ही शिवजी कर्ता हर्ता तुम ही जगके रखवारे।  
तुम ही गगन मगन पुनि पृथिवी पर्वतपुत्रीके प्यारे॥  
तुम ही पवन हुताशन शिवजी तुम ही रवि-शशि तमहारी॥  
भोलेनाथ०

पशुपति अजर अमर अमरेश्वर योगेश्वर शिव गोस्वामी।  
वृषभारूढ़ गूढ़ गुरु गिरिपति गिरिजावल्लभ निष्कामी॥  
सुषमासागर रूप उजागर गावत हैं सब नरनारी॥  
भोलेनाथ०

महादेव देवोंके अधिपति फणिपति-भूषण अति साजै।  
दीप्त ललाट लाल दोउ लोचन उर आनत ही दुख भाजै॥  
परम प्रसिद्ध पुनीत पुरातन महिमा त्रिभुवन-विस्तारी॥  
भोलेनाथ०

ब्रह्मा-विष्णु-महेश-शेष मुनि-नारद आदि करत सेवा।  
सबकी इच्छा पूरन करते नाथ सनातन हर देवा॥  
भक्ति-मुक्तिके दाता शंकर नित्य-निरंतर सुखकारी॥  
भोलेनाथ०

महिमा इष्ट महेश्वरकी जो सीखे सुने नित्य गावै।  
अष्टसिद्धि-नवनिधि सुखसम्पति स्वामिभक्ति मुक्ती पावै॥  
श्रीअहिभूषण प्रसन्न होकर कृपा कीजिये त्रिपुरारी॥  
भोलेनाथ०

## श्रीदेवी-वन्दना

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद  
 प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।  
 प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं  
 त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥

□□

## श्रीदेवीजी

जय जय देवि जयति जय, जय मोहिनिरूपे ।  
 मामिह जननि समुद्धर पतितं भवकूपे ॥ ध्रुवपदम् ॥  
 प्रवरातीरनिवासिनि निगमप्रतिपाद्ये  
 पारावारविहारिणि नारायणि हृद्ये ॥  
 प्रपञ्चसारे जगदाधारे श्रीविद्ये  
 प्रपन्नपालननिरते मुनिवृन्दाराध्ये ॥ १ ॥ जय जय० ॥  
 दिव्यसुधाकरवदने कुन्दोज्ज्वलरदने  
 पदनखनिर्जितमदने मधुकैटभकदने ।  
 विकसितपङ्कजनयने पन्नगपतिशयने  
 खगपतिवहने गहने सङ्कटवनदहने ॥ २ ॥ जय जय० ॥  
 मञ्जीराङ्कितचरणे मणिमुक्ताभरणे  
 कञ्चुकिवस्त्रावरणे वक्त्राम्बुजधरणे ।  
 शक्रामयभयहरणे भूसुरसुखकरणे  
 करुणां कुरु मे शरणे गजनक्रोद्धरणे ॥ ३ ॥ जय जय० ॥  
 छित्त्वा राहुग्रीवां पासि त्वं विबुधान्  
 ददासि मृत्युमनिष्टं पीयूषं विबुधान् ।  
 विहरसि दानवक्रुद्धान् समरे संसिद्धान्  
 मध्वमुनीश्वरवरदे पालय संसिद्धान् ॥ ४ ॥ जय जय० ॥

□□

## श्रीदेवीजी

जय जय, जगजननि देवि सुर-नर-मुनि-असुर-सेवि,  
 भुक्ति-मुक्ति-दायिनि भयहरणि कालिका।  
 मंगल-मुद-सिद्धि-सदनि, पर्वशर्वरीश-वदनि,  
 ताप-तिमिर तरुण-तरणि-किरणमालिका ॥ १ ॥  
 वर्म-चर्म-कर-कृपाण शूल-शेल-धनुष-बाण-  
 धरणि, दलनि दानव-दल, रण-करालिका।  
 पूतना-पिशाच-प्रेत डाकिनि-शाकिनि-समेत  
 भूत-ग्रह-बेताल-खग-मृगालि-जालिका ॥ २ ॥  
 जय महेश-भामिनी अनेक-रूप-नामिनी,  
 समस्त-लोक-स्वामिनी हिमशैल-बालिका।  
 रघुपति-पद परम प्रेम, तुलसी यह अचल नेम,  
 देहु है प्रसन्न पाहि प्रनतपालिका ॥ ३ ॥

□ □

## श्रीदुर्गाजी

जगजननी जय! जय! मा! जगजननी जय! जय!!  
 भयहारिणि, भवतारिणि, भवभामिनि जय जय ॥ टेक ॥  
 तू ही सत-चित-सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा।  
 सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव सुर-भूषा ॥ १ ॥ जग० ॥  
 आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी।  
 अमल अनन्त अगोचर अज आनँदराशी ॥ २ ॥ जग० ॥  
 अविकारी, अघहारी, अकल कलाधारी।  
 कर्ता विधि, भर्ता हरि, हर संहारकारी ॥ ३ ॥ जग० ॥  
 तू विधि-वधू, रमा, तू उमा, महामाया।  
 मूल प्रकृति, विद्या तू, तू जननी जाया ॥ ४ ॥ जग० ॥  
 राम, कृष्ण तू, सीता, ब्रजरानी राधा।  
 तू वाञ्छाकल्पद्रुम हारिणि सब बाधा ॥ ५ ॥ जग० ॥  
 दश विद्या, नव दुर्गा नाना शस्त्रकरा।  
 अष्टमातृका, योगिनि, नव-नव-रूप-धरा ॥ ६ ॥ जग० ॥

तू परधामनिवासिनि, महाविलासिनि तू।  
 तू ही श्मशानविहारिणि, ताण्डवलासिनि तू॥ ७ ॥ जग० ॥  
 सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या तू शोभाधारा।  
 विवसन विकट-सरूपा, प्रलयमयी धारा॥ ८ ॥ जग० ॥  
 तू ही स्नेहसुधामयि, तू अति गरलमना।  
 रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना॥ ९ ॥ जग० ॥  
 मूलाधारनिवासिनि, इह-पर-सिद्धिप्रदे।  
 कालातीता काली, कमला तू वरदे॥ १० ॥ जग० ॥  
 शक्ति शक्तिधर तू ही नित्य अभेदमयी।  
 भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले! वेदत्रयी॥ ११ ॥ जग० ॥  
 हम अति दीन दुखी माँ! विपत-जाल घेरे।  
 हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे॥ १२ ॥ जग० ॥  
 निज स्वभाववश जननी! दयादृष्टि कीजै।  
 करुणा कर करुणामयि! चरण-शरण दीजै॥ १३ ॥ जग० ॥  
 □ □

### श्रीअम्बाजी

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामागौरी।  
 तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव री॥ १ ॥ जय अम्बे०  
 माँग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको।  
 उज्ज्वलसे दोउ नैना, चंद्रवदन नीको॥ २ ॥ जय अम्बे०  
 कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।  
 रक्त-पुष्प गल माला, कण्ठनपर साजै॥ ३ ॥ जय अम्बे०  
 केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी।  
 सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी॥ ४ ॥ जय अम्बे०  
 कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।  
 कोटिक चंद्र दिवाकर सम राजत ज्योती॥ ५ ॥ जय अम्बे०  
 शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती।  
 धूम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती॥ ६ ॥ जय अम्बे०

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे।  
 मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ॥ ७ ॥ जय अम्बे०  
 ब्रह्माणी, रुद्राणी तुम कमलारानी।  
 आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी ॥ ८ ॥ जय अम्बे०  
 चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ।  
 बाजत ताल मृदंगा औ बाजत डमरू ॥ ९ ॥ जय अम्बे०  
 तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता।  
 भक्तनकी दुख हरता सुख सम्पति करता ॥ १० ॥ जय अम्बे०  
 भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।  
 मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी ॥ ११ ॥ जय अम्बे०  
 कंचन थाल विराजत अगर कपुर बाती।  
 (श्री) मालकेतुमें राजत कोटिरतन ज्योती ॥ १२ ॥ जय अम्बे०  
 (श्री) अम्बेजीकी आरति जो कोइ नर गावै।  
 कहत शिवानंद स्वामी, सुख सम्पति पावै ॥ १३ ॥ जय अम्बे०

□□

### श्रीदेवीजी

आरति कीजै शैल-सुताकी ॥ आरति०॥  
 जगदंबाकी आरति कीजै।  
 स्नेह-सुधा, सुख सुन्दर लीजै ॥  
 जिनके नाम लेत दुग भीजै।  
 ऐसी वह माता वसुधाकी ॥ आरति०॥  
 पाप-विनाशिनि कलि-मल-हारिणि।  
 दयामयी, भवसागरतारिणि ॥  
 शस्त्र-धारिणी, शैल-विहारिणि।  
 बुद्धिराशि गणपति माताकी ॥ आरति०॥  
 सिंहवाहिनी मातु भवानी।  
 गौरव-गान करैं जगप्रानी ॥

शिवके हृदयासनकी रानी।  
करैं आरती मिल-जुल ताकी॥ आरति०॥

□□

### श्रीज्वाला-काली देवीजी

‘मंगल’की सेवा, सुन मेरी देवा! हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े।  
पान-सुपारी, ध्वजा-नारियल ले ज्वाला तेरी भेंट धरे॥  
सुन जगदम्बे न कर बिलंबे संतनके भंडार भरे।  
संतन प्रतिपाली सदा खुशाली जै काली कल्याण करे॥ १॥ टेक ॥  
‘बुद्ध’ विधाता तू जगमाता मेरा कारज सिद्ध करे।  
चरण-कमलका लिया आसरा शरण तुम्हारी आन परे॥  
जब-जब भीर पड़े भक्तनपर तब-तब आय सहाय करे।

संतन प्रतिपाली०॥ २॥

‘गुरु’के बार सकल जग मोह्यो तरुणीरूप अनूप धरे।  
माता होकर पुत्र खिलावै, कहीं भार्या भोग करे॥  
‘शुक्र’ सुखदाई सदा सहाई संत खड़े जयकार करे।

संतन प्रतिपाली०॥ ३॥

ब्रह्मा विष्णु महेस फल लिये भेंट देन तव द्वार खड़े।  
अटल सिंहासन बैठी माता सिर सोनेका छत्र फिरे॥  
वार ‘शनिश्चर’ कुंकुम बरणी, जब लुंकड़पर हुकुम करे।

संतन प्रतिपाली०॥ ४॥

खड्ग खपर त्रिशूल हाथ लिये रक्तबीजकूँ भस्म करे।  
शुंभ निशुंभ क्षणहिमें मारे महिषासुरको पकड़ दले॥  
‘आदित’ वारी आदि भवानी जन अपनेका कष्ट हरे।

संतन प्रतिपाली०॥ ५॥

कुपित होय कर दानव मारे चण्ड मुण्ड सब चूर करे।  
जब तुम देखौ दयारूप हो, पलमें संकट दूर टरे॥  
‘सोम’ स्वभाव धर्यो मेरी माता जनकी अर्ज कबूल करे।

संतन प्रतिपाली०॥ ६॥

सात बारकी महिमा बरनी सब गुण कौन बखान करे।  
 सिंहपीठपर चढ़ी भवानी अटल भवनमें राज्य करे॥  
 दर्शन पावें मंगल गावें सिध साधक तेरी भेंट धरे।  
 संतन प्रतिपाली०॥ ७॥  
 ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे शिवशंकर हरि ध्यान करे।  
 इन्द्र कृष्ण तेरी करैं आरती चमर कुबेर डुलाय करे॥  
 जय जननी जय मातु भवानी अचल भवनमें राज्य करे।  
 संतन प्रतिपाली सदा खुशाली जय काली कल्याण करे॥ ८॥

□□

### श्रीपर्वतवासिनी ज्वालाजी

सुन मेरी देवी पर्वतवासिनि तेरा पार न पाया॥ टेक ॥  
 पान सुपारी ध्वजा नारियल ले तेरे भेंट चढ़ाया॥  
 सुवा चोली तेरे अंग विराजै केसर तिलक लगाया।  
 नंगे पाँव तेरे अकबर जाकर सोनेका छत्र चढ़ाया॥  
 ऊँचे-ऊँचे पर्वत बना देवालय नीचे शहर बसाया।  
 सत्ययुग त्रेता द्वापर मध्ये कलियुग राज सवाया॥  
 धूप दीप नैवेद्य आरती मोहन भोग लगाया।  
 धानू भगत मैया ( तेरा ) गुण गावै मन वांछित फल पाया॥

□□

### श्रीसूर्य-वन्दना

नमो नमस्तेऽस्तु सदा विभावसो  
 सर्वात्मने सप्तहयाय भानवे।  
 अनन्तशक्तिर्मणिभूषणेन  
 वदस्व भक्तिं मम मुक्तिमव्ययाम्॥

□□

### भगवान् सूर्य

जय कश्यप-नन्दन, ॐ जय अदिति-नन्दन।  
 त्रिभुवन-तिमिर-निकन्दन भक्त-हृदय-चन्दन॥ टेक ॥



सप्त-अश्वरथ राजित एक चक्रधारी ।  
 दुखहारी, सुखकारी, मानस-मल-हारी ॥ जय० ॥  
 सुर-मुनि-भूसुर-वंदित, विमल विभवशाली ।  
 अघ-दल-दलन दिवाकर दिव्य किरण माली ॥ जय० ॥  
 सकल-सुकर्म-प्रसविता सविता शुभकारी ।  
 विश्व-विलोचन मोचन भव-बंधन भारी ॥ जय० ॥  
 कमल-समूह-विकासक, नाशक त्रय तापा ।  
 सेवत सहज हरत अति मनसिज-संतापा ॥ जय० ॥  
 नेत्र-व्याधि-हर सुरवर भू-पीड़ा-हारी ।  
 वृष्टि-विमोचन संतत परहित-व्रतधारी ॥ जय० ॥  
 सूर्यदेव करुणाकर अब करुणा कीजै ।  
 हर अज्ञान-मोह सब तत्त्वज्ञान दीजै ॥ जय० ॥

□□

### श्रीहनुमत्-वन्दन

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं  
 दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।  
 सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं  
 रघुपतिवरदूतं वातजातं नमामि ॥

□□

### श्रीहनुमान्जी

जयति मंगलागार, संसार, भारापहर, वानराकार विग्रह पुरारी ।  
 राम-रोषानल, ज्वालमाला-मिषध्वान्तचर-सलभ-संहारकारी ॥ १ ॥  
 जयति मरुदंजनामोद-मंदिर, नतग्रीवसुग्रीव-दुःखैकबंधो ।  
 यातुधानोद्धत-क्रुद्ध-कालाग्निहर, सिद्ध-सुर-सज्जनानंदसिंधो ॥ २ ॥  
 जयति रुद्राग्रणी, विश्ववंद्याग्रणी, विश्वविख्यात-भट-चक्रवर्ती ।  
 सामगाताग्रणी, कामजेताग्रणी, रामहित, रामभक्तानुवर्ती ॥ ३ ॥  
 जयति संग्रामजय, रामसंदेशहर, कौशला-कुशल-कल्याणभाषी ।  
 राम-विरहार्क-संतप्त-भरतादि-नर-नारि-शीतलकरणकल्पशाषी ॥ ४ ॥



जयति सिंहासनासीन सीतारमण, निरखि निर्भर हरष नृत्यकारी ।  
राम संभ्राज शोभा-सहित सर्वदा तुलसि-मानस-रामपुर-विहारी ॥ ५ ॥

□ □

### श्रीहनुमान्जी

मंगल-मूरति मारुत-नंदन । सकल-अमंगल-मूल-निकंदन ॥ १ ॥  
पवन-तनय संतन-हितकारी । हृदय विराजत अवध बिहारी ॥ २ ॥  
मातु-पिता, गुरु गनपति, सारद । सिवा-समेत संभु, सुक-नारद ॥ ३ ॥  
चरन बंदि बिनवौं सब काहू । देहु रामपद-नेह-निबाहू ॥ ४ ॥  
बंदौं राम-लखन-बैदेही । जे तुलसीके परम सनेही ॥ ५ ॥

□ □

### श्रीहनुमान्जी

वन्दे सन्तं श्रीहनुमन्तं रामदासममलं बलवन्तम् ।  
रामकथामृतमधु निपिबन्तं परमप्रेमभरेण नटन्तम् ॥ १ ॥  
प्रेमरुद्धगलमश्रुवहन्तं पुलकाञ्चितवपुषा विलसन्तम् ।  
सर्वं राममयं पश्यन्तं राघवनाम सदा प्रजपन्तम् ॥ २ ॥  
कदाचिदानन्देन हसन्तं क्वचित् कदाचिदपि प्ररुदन्तम् ।  
सद्भक्तिपथं समुपदिशन्तं विट्पलपन्तं प्रति सुखयन्तम् ॥ ३ ॥

□ □

### श्रीअंजनीकुमारजी

आरति श्रीअंजनिकुमारकी ।

शिवस्वरूप मारुतनन्दन, केसरी-सुअन कलियुग-कुठारकी ॥  
हियमें राम-सीय नित राखत,  
मुखसौं राम-नाम-गुण भाखत,  
सुमधुर भक्ति-प्रेम-रस चाखत,  
मङ्गलकर मङ्गलाकारकी ॥ आरति ० ॥  
विस्मृत-बल-पौरुष, अतुलित बल,  
दहन दनुज-वन हित, दावानल,

ज्ञानि-मुकुट-मणि, पूर्ण गुण सकल,  
 मंजु भूमिशुभ सदाचारकी ॥ आरति० ॥  
 मन-इन्द्रिय-विजयी, विशाल मति,  
 कलानिधान, निपुण गायक अति,  
 छन्द-व्याकरण-शास्त्र अमित गति,  
 रामभक्त अतिशय उदारकी ॥ आरति० ॥  
 पावन परम सुभक्ति प्रदायक,  
 शरणागतको सब सुखदायक,  
 विजयी वानर-सेना-नायक,  
 सुगति-पोतके कर्णधारकी ॥ आरति० ॥

□□

### श्रीहनुमानललाजी

आरती कीजै हनुमानललाकी । दुष्टदलन रघुनाथ कलाकी ॥ टेक ॥  
 जाके बलसे गिरिवर काँपै । रोग दोष जाके निकट न झाँपै ॥  
 अंजनिपुत्र महा बलदाई । संतनके प्रभु सदा सहाई ॥  
 दे बीरा रघुनाथ पठाये । लंका जारि सीय सुधि लाये ॥  
 लंका-सो कोट समुद्र-सी खाई । जात पवनसुत बार न लाई ॥  
 लंका जारि असुर संहारे । सीतारामजीके काज सँवारे ॥  
 लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे । आनि सजीवन प्राण उबारे ॥  
 पैठि पताल तोरि जम-कारे । अहिरावनकी भुजा उखारे ॥  
 बायें भुजा असुरदल मारे । दहिने भुजा संतजन तारे ॥  
 सुर नर मुनि आरती उतारे । जय जय जय हनुमान उचारे ॥  
 कंचन थार कपूर लौ छाई । आरति करत अंजना माई ॥  
 जो हनुमानजीकी आरति गावै । बसि बैकुंठ परम पद पावै ॥

□□

### श्रीगंगा-वन्दन

पापापहारि दुरितारि तरङ्गधारि  
 शैलप्रचारि गिरिराजगुहाविदारि ।

झङ्कारकारि

हरिपादरजोऽपहारि

गाङ्गं पुनातु सततं शुभकारि वारि॥

□ □

### श्रीगंगाजी

जय जय भगीरथनंदिनि, मुनि-चय चकोर-चंदिनि,  
 नर-नाग-बिबुधबंदिनि, जय जह्नुबालिका ।  
 विष्णु-पद-सरोजजासि, ईस-सीस पर विभासि,  
 त्रिपथगासि, पुन्यरासि, पाप-छालिका ॥ १ ॥  
 बिमल विपुल बहसि बारि, सीतल त्रयताप-हारि,  
 भँवर बर विभंगतर तरंग-मालिका ।  
 पुरजन-पूजोपहार-सोभित ससि-धवल धार,  
 भंजन भव-भार, भक्ति-कल्प-थालिका ॥ २ ॥  
 निज तट बासी बिहंग, जल-थल-चर पसु-पतंग,  
 कीट, जटिल तापस, सब सरिस पालिका ।  
 तुलसी तव तीर तीर सुमिरत रघुबंस-बीर,  
 बिचरत मति देहि मोह-महिष-कालिका ॥ ३ ॥

□ □

### श्रीगंगाजी

हरनि पाप त्रिबिध ताप सुमिरत सुरसरित,  
 बिलसति महि कल्प-बेलि मुद-मनोरथ फरित ॥ १ ॥  
 सोहत ससि-धवल धार सुधा-सलिल-भरित  
 बिमलतर तरंग लसत रघुबरके-से चरित ॥ २ ॥  
 तो बिनु जगदंब गंग कलियुग का करित ?  
 घोर भव-अपार सिंधु तुलसी किमि तरित ॥ ३ ॥

□ □

### श्रीगंगाजी

जय गंगा मैया-माँ जय सुरसरि मैया ।  
 भव-वारिधि उद्धारिणि अतिहि सुदृढ़ नैया ॥  
 हरि-पद-पद्म-प्रसूता विमल वारिधारा ।  
 ब्रह्मद्रव भागीरथि शुचि पुण्यागारा ॥  
 शंकर-जटा बिहारिणि हारिणि त्रय-तापा ।  
 सगर-पुत्र-गण-तारिणि, हरणि सकल पापा ॥  
 'गंगा-गंगा' जो जन उच्चारत मुखसों ।  
 दूर देशमें स्थित भी तुरत तरत सुखसों ॥  
 मृतकी अस्थि तनिक तुव जल-धारा पावै ।  
 सो जन पावन होकर परम धाम जावै ॥  
 तव तटबासी तरुवर, जल-थल-चरप्राणी ।  
 पक्षी-पशु-पतंग गति पावैं निर्वाणी ॥  
 मातु! दयामयि कीजै दीननपर दाया ।  
 प्रभु-पद-पद्म मिलाकर हरि लीजै माया ॥

□□

### श्रीयमुना-वन्दन

मुरारिकायकालिमा ललामवारिधारिणी  
 तृणीकृतत्रिविष्टपा त्रिलोकशोकहारिणी ।  
 मनोऽनुकूलकूलकुञ्जपुञ्जधूतदुर्मदा  
 धुनोतु मे मनोमलं कलिन्दनन्दिनी सदा ॥

□□

### श्रीयमुनाजी

जय कालिंदी, हरिप्रिया जय ।  
 जय रबि-तनया, तपोमयी जय ॥ १ ॥  
 जय श्यामा, अति अभिरामा जय ।  
 जय सुखदा श्रीहरि रामा जय ॥ २ ॥  
 जय ब्रज-मण्डल-वासिनि जय जय ।  
 जय द्वारकानिवासिनि जय जय ॥ ३ ॥

जय कलि-कलुष-नसावनि जय जय ।  
 जय यमुने जय पावनि, जय जय ॥ ४ ॥  
 जय निर्वाण-प्रदायिनि जय जय ।  
 जय हरि-प्रेम-दायिनी जय जय ॥ ५ ॥

□ □

### श्रीनर्मदाजी

जय जय नर्मद ईश्वरि मेकलसंजाते ।  
 नीराजयामि नाशिततापत्रयजाते ॥  
 वारितसंसृतिभीते सुरवरमुनिगीते ।  
 सुखदे पावनकीर्ते शङ्करतनुजाते ॥  
 देवापगाधितीर्थे दत्ताग्र्यपुमर्थे ।  
 वाचामगम्यकीर्ते जलमयसन्मूर्ते ॥ जय जय ० ॥  
 नन्दनवनसमतीरे स्वादुसुधानीरे ।  
 दर्शितभवपरतीरे दमितांतकसारे ॥  
 सकलक्षेमाधारे वृतपारावारे ।  
 रक्षास्मानतिघोरे मग्नान् संसारे ॥ जय जय ० ॥  
 स्वयशःपावितजीवे मामुद्धर रेवे ।  
 तीरं ते खलु सेवे त्वयि निश्चितभावे ॥  
 कृतदुष्कृतदवदावे त्वत्पदराजीवे ।  
 तारक इह मेऽतिजवे भक्त्या ते सेवे ॥ जय जय ० ॥

□ □

### भगवान् श्रीबदरीनाथजी

जय जय श्रीबदरीनाथ जयति योग-ध्यानी ॥ टेक ॥  
 निर्गुण सगुण स्वरूप, मेघवर्ण अति अनूप,  
 सेवत चरण सुरभूष, ज्ञानी विज्ञानी ॥ जय जय ० ॥  
 झलकत है शीश छत्र, छबि अनूप अति विचित्र,  
 बरनत पावन चरित्र सकुचत बरबानी ॥ जय जय ० ॥  
 तिलक भाल अति विशाल, गलमें मणि-मुक्त-माल,  
 प्रनतपाल अति दयाल, सेवक सुखदानी ॥ जय जय ० ॥

कानन कुंडल ललाम, मूरति सुखमाकी धाम,  
 सुमिरत हों सिद्धि काम, कहत गुण बखानी ॥ जय जय० ॥  
 गावत गुण शंभु, शेष, इन्द्र, चन्द्र अरु दिनेश,  
 विनवत श्यामा हमेश जोरि जुगल पानी ॥ जय जय० ॥

□□

### श्रीबदरीनाथ-स्तुति

पवन मंद सुगंध शीतल, हेममन्दिर शोभितम्।  
 निकट गंगा बहत निर्मल, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥ १ ॥  
 शेष सुमिरन करत निशिदिन ध्यान धरत महेश्वरम्।  
 श्री वेद ब्रह्मा करत स्तुति श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥ २ ॥  
 इन्द्र चन्द्र कुबेर दिनकर, धूप दीप निवेदितम्।  
 सिद्ध मुनिजन करत जय जय, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥ ३ ॥  
 शक्ति गौरि गणेश शारद, नारद मुनि उच्चारणम्।  
 योग ध्यान अपार लीला, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥ ४ ॥  
 यक्ष किन्नर करत कौतुक, गान गन्धर्व प्रकाशितम्।  
 श्रीभूमि लक्ष्मी चँवर डोलैं, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥ ५ ॥  
 कैलासमें एक देव निरंजन, शैल-शिखर महेश्वरम्।  
 राजा युधिष्ठिर करत स्तुति, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥ ६ ॥  
 श्रीबदरीनाथ ( जी ) की परम स्तुति यह पढ़त पाप विनाशनम्।  
 कोटि-तीर्थ सुपुण्य सुन्दर सहज अति फलदायकम् ॥ ७ ॥

□□

### श्रीबदरीनाथ-महिमा

तुहिन गिरिमधि परम सुखप्रद आश्रमं अतिशोभितम्।  
 जहाँ बसत सब सुर मुकुटमणि श्रीबद्रीनाथ जगत्प्रभुम् ॥ १ ॥  
 बहत सुरसरि-धार निर्मल अघसमूह निकन्दनम्।  
 सिद्ध-मुनि-सुर करत जय जय श्रीबद्रीनाथ जगत्प्रभुम् ॥ २ ॥  
 चलत मंद सुगन्ध शीतल वायु, पुष्प सुशोभितम्।  
 शक्ति-शेष-महेश सुमिरत श्रीबद्रीनाथ जगत्प्रभुम् ॥ ३ ॥

वदत सनकादिक महामुनि वेदवाक्य निरन्तरम् ।  
 ब्रह्म-नारद करत स्तुति श्रीबद्रीनाथ जगत्प्रभुम् ॥ ४ ॥  
 सकल जगदाधार व्यापक ब्रह्म अलख अनामयम् ।  
 जगत व्याप्त अपार महिमा श्रीबद्रीनाथ जगत्प्रभुम् ॥ ५ ॥  
 इन्द्र उद्धव चन्द्र रवि गन्धर्व सेवत तत्परम् ।  
 करत कमला सतत सेवा श्रीबद्रीनाथ जगत्प्रभुम् ॥ ६ ॥  
 योग साधत योगि निशिदिन ज्योति निरखत संततम् ।  
 कृपा कीजै भक्तजन पर श्रीबद्रीनाथ जगत्प्रभुम् ॥ ७ ॥  
 अज अनामय ईश गो-द्विजपालकं सुर वन्दितम् ।  
 विश्वपालक असुर-घालक श्रीबद्रीनाथ जगत्प्रभुम् ॥ ८ ॥  
 जपत निशिदिन नाम तव जो लहत भक्ति सुजीवनम् ।  
 दासपर करु कृपा संतत श्रीबद्रीनाथ जगत्प्रभुम् ॥ ९ ॥

□ □

### श्रीबदरीनाथाष्टकम्

भू-वैकुण्ठकृतावासं देवदेवं जगत्पतिम् ।  
 चतुर्वर्गप्रदातारं श्रीबद्रीशं नमाम्यहम् ॥ १ ॥  
 तापत्रयहरं साक्षाच्छान्तिपुष्टिबलप्रदम् ।  
 परमानन्ददातारं श्रीबद्रीशं नमाम्यहम् ॥ २ ॥  
 सद्यः पापक्षयकरं सद्यः कैवल्यदायकम् ।  
 लोकत्रयविधातारं श्रीबद्रीशं नमाम्यहम् ॥ ३ ॥  
 भक्तवाञ्छाकल्पतरुं करुणारसविग्रहम् ।  
 भवाब्धिपारकर्तारं श्रीबद्रीशं नमाम्यहम् ॥ ४ ॥  
 सर्वदेवनुतं शश्वत् सर्वतीर्थास्पदं विभुम् ।  
 लीलयोपात्तवपुषं श्रीबद्रीशं नमाम्यहम् ॥ ५ ॥  
 अनादिनिधनं कालकालं भीमयमच्युतम् ।  
 सर्वाश्चर्यमयं देवं श्रीबद्रीशं नमाम्यहम् ॥ ६ ॥  
 गन्धमादनकूटस्थं नरनारायणात्मकम् ।  
 बदरीखण्डमध्यस्थं श्रीबद्रीशं नमाम्यहम् ॥ ७ ॥  
 शत्रूदासीनमित्राणां सर्वज्ञं समदर्शिनम् ।  
 ब्रह्मानन्दचिदाभासं श्रीबद्रीशं नमाम्यहम् ॥ ८ ॥

श्रीबद्रीशाष्टकमिदं यः पठेत्प्रयतः शुचिः ।  
सर्वपापविनिर्मुक्तः स शान्तिं लभते पराम् ॥ ९ ॥

□□

### श्रीगोमाता

आरति श्रीगैया-मैयाकी ।  
आरति-हरनि विश्वधैयाकी ॥ टेक ॥  
अर्थकाम-सद्धर्म-प्रदायिनि ।  
अविचल अमल मुक्तिपददायिनि ।  
सुर-मानव सौभाग्यविधायिनि,  
प्यारी पूज्य नंद-छैयाकी ॥ आरति० ॥  
अखिल विश्व प्रतिपालिनि माता,  
मधुर अमिय दुग्धान्न प्रदाता ।  
रोग-शोक-संकट परित्राता,  
भवसागर हित दृढ़ नैयाकी ॥ आरति० ॥  
आयु-ओज-आरोग्यविकाशिनि,  
दुःख-दैन्य-दारिद्र्य-विनाशिनि ।  
सुषमा-सौख्य-समृद्धि-प्रकाशिनि,  
विमल विवेक-बुद्धि-दैयाकी ॥ आरति० ॥  
सेवक हो, चाहे दुखदाई,  
सम पय-सुधा पियावति माई ।  
शत्रु-मित्र सबको सुखदाई,  
स्नेह-स्वभाव-विश्व-जैयाकी ॥ आरति० ॥

□□

### श्रीमद्भागवत

आरति अतिपावन पुरानकी,  
धर्म-भक्ति-विज्ञान-खानकी ॥ टेक ॥  
महापुराण भागवत निर्मल ।  
शुक-मुख-विगलित निगम-कल्प-फल ।



परमानन्दसुधा-रसमय कल ।  
 लीला-रति-रस-रसनिधानकी ॥ आरति० ॥  
 कलिमल-मथनि त्रिताप-निवारिणि ।  
 जन्ममृत्युमय भव-भयहारिणि ।  
 सेवत सतत सकल सुखकारिणि ।  
 सुमहौषधि हरि-चरित गानकी ॥ आरति० ॥  
 विषय-विलास-विमोह-विनाशिनि ।  
 विमल विराग विवेक विकाशिनि ।  
 भगवत्-तत्त्व-रहस्य-प्रकाशिनि ।  
 परम ज्योति परमात्मज्ञानकी ॥ आरति० ॥  
 परमहंस-मुनि-मन-उल्लासिनि ।  
 रसिक-हृदय रस-रास-विलासिनि ।  
 भुक्ति-मुक्ति-रति-प्रेम-सुदासिनि ।  
 कथा अकिंचन प्रिय सुजानकी ॥ आरति० ॥

□□

### श्रीमद्भगवद्गीता

मत्वा मोहात् पार्थो निजधर्मे पापम् ।  
 युद्धाद्विरतः शोचन् भुवि निदधे चापम् ॥  
 त्वत्तो लब्ध्वा मोहध्वंसकरीं दृष्टिम् ।  
 भीष्मद्रोणादिषु युधि चक्रे शरवृष्टिम् ।  
 जय जय जगदभिवन्द्ये जय भगवद्गीते ॥ १ ॥  
 काण्डेषु त्रिषु भगवान् यान्यवदद् वेदः ।  
 सूक्ष्मधियामपि येषां दुरवगमो भेदः ॥  
 तेषां कर्मोपास्तिज्ञानानां हृदयम् ।  
 स्पष्टं प्रकटीकुरुषे मातस्त्वं सदयम् ॥ जय जय० ॥  
 जनयसि हृदि मन्दानां निजधर्मासक्तिम् ।  
 दृढयसि मध्यानां श्रीहरिचरणे भक्तिम् ॥  
 निर्मलमनसः केचन विन्दन्त्यपि मुक्तिम् ।  
 ध्यायन्त्यनिशं ये तव गम्भीरामुक्तिम् ॥ जय जय० ॥

त्यक्त्वा कर्मफलेष्वभिसंधिमहंकारम् ।  
 कृष्णार्पणबुद्ध्या कुरु विधिविहिताचारम् ॥  
 इत्युपदेशं हृदये तव कुर्वज्जन्तुः ।  
 तीर्त्वा भवसिन्धुं पदमाप्नोत्यघहन्तुः ॥ जय जय० ॥  
 प्राहुस्त्वां सर्वासामुपनिषदां सारम् ।  
 कुर्वन्ति त्वां कृतिनः कण्ठालंकारम् ।  
 केशवमुखजन्मैका त्वं पुंसां शरणम् ।  
 तटिनी सान्या यस्याः प्रभवस्तच्चरणम् ॥ जय जय० ॥

□□

## श्रीमद्भगवद्गीता

( १ )

आरति श्रीभगवद्गीताकी ॥  
 वासुदेव-श्रीमुखकी बानी,  
 आध्यात्मिक कृतियनकी रानी,  
 विजय-विभूति-मुक्तिकी दानी,  
 मुद-मंगलमय सुपुनीताकी ॥ आरति० ॥

( २ )

महाभारते व्यासविगुम्फित,  
 समरांगणमें पार्थ प्रबोधित,  
 सुर-नर-मुनि सबही सों वन्दित,  
 पाप-पुंज-कुंजर-चीताकी ॥ आरति० ॥

( ३ )

मर्म त्यागको सत्य सुझावनि,  
 दुरित द्वैत दुख दूरि नसावनि,  
 अद्वैतामृत-धार बहावनि,  
 भव-दसकन्ध सती सीताकी ॥ आरति० ॥

( ४ )

उपनिषदनको सार सुहावन,  
अनासक्त शुभ काज करावन,  
मन-वच-कर्म संत-मन-भावन,  
भक्ति-ज्ञान-जुग जग-जीताकी ॥ आरति० ॥

( ५ )

रवि-कर भ्रम-तम-तोम-निवारिणि,  
विमल-विवेक विश्व विस्तारिणि,  
सुमति-सुधर्म-सुराज्य प्रचारिणि,  
'दामोदर' अनुपम गीताकी ॥ आरति० ॥

□ □

### श्रीमद्भगवद्गीता

जय भगवद्गीते, माँ जय भगवद्गीते ।  
हरि-हिय-कमल-विहारिणि सुन्दर सुपुनीते ॥ टेक ॥  
कर्म-सुधर्म-प्रकाशिनि कामासक्तिहरा ।  
तत्त्व-ज्ञान-विकाशिनि विद्या ब्रह्म-परा ॥ जय० ॥  
निश्चल-भक्ति-विधायिनि निर्मल मलहारी ।  
शरण-रहस्य-प्रदायिनि सब विधि सुखकारी ॥ जय० ॥  
राग-द्वेष-विदारिणि कारिणि मोद सदा ।  
भव-भय-हारिणि तारिणि परमानन्दप्रदा ॥ जय० ॥  
आसुर-भाव-विनाशिनि नाशिनि तम-रजनी ।  
दैवी-सद्गुण-दायिनि हरि-रसिका सजनी ॥ जय० ॥  
समता त्याग-सिखावनि, हरिमुखकी बानी ।  
सकल शास्त्रकी स्वामिनि, श्रुतियोंकी रानी ॥ जय० ॥  
दया-सुधा-बरसावनि मातु! कृपा कीजै ।  
हरि-पद-प्रेम दान कर अपनो कर लीजै ॥ जय० ॥

□ □

## श्रीरामायणजी

आरति श्रीरामायनजी की,  
 कीरति कलित ललित सिय पी की॥ टेक॥  
 गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद,  
 बालमीक विग्यान-बिसारद।  
 सुक सनकादि सेष अरु सारद,  
 बरनि पवनसुत कीरति नीकी॥ १ ॥  
 गावत बेद पुरान अष्टदस,  
 छओ सास्त्र सब ग्रंथन को रस।  
 मुनि जन धन संतन को सरबस,  
 सार अंस संमत सबही की॥ २ ॥  
 गावत संतत संभु भवानी  
 अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी।  
 ब्यास आदि कबिबर्ज बखानी,  
 कागभुसुंडि गरुड के ही की॥ ३ ॥  
 कलिमल-हरनि बिषय रस फीकी,  
 सुभग सिंगार मुक्ति जुबती की।  
 दलन रोग भव मूरि अमी की,  
 तात मात सब बिधि तुलसी की॥ ४ ॥

अखिल विश्व-आनन्द-विधायिनि,  
 मंगलमयी सुमंगलदायिनि,  
 नन्दनन्दन-पदप्रेम प्रदायिनि,  
 अमिय-राग-रस रंग-रलीकी ॥ २ ॥

नित्यानन्दमयी आह्लादिनि,  
 आनन्दघन-आनन्द-प्रसाधिनि,  
 रसमयि, रसमय-मन-उन्मादिनि,  
 सरस कमलिनी कृष्ण-अलीकी ॥ ३ ॥

नित्य निकुंजेश्वरि राजेश्वरि,  
 परम प्रेमरूपा परमेश्वरि,  
 गोपिगणाश्रयि गोपिजनेश्वरि,  
 विमल विचित्र भाव-अवलीकी ॥ ४ ॥

□ □

### भगवान् शंकर

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।  
 सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि॥

□ □

### भगवान् गंगाधर

ॐ जय गङ्गाधर जय हर जय गिरिजाधीश।  
 त्वं मां पालय नित्यं कृपया जगदीश ॥ १ ॥ ॐ हर हर हर महादेव ॥  
 कैलासे गिरिशिखरे कल्पद्रुमविपिने।  
 गुञ्जति मधुकरपुञ्जे कुञ्जवने गहने ॥  
 कोकिलकूजित खेलत हंसावन ललिता।  
 रचयति कलाकलापं नृत्यति मुदसहिता ॥ २ ॥ ॐ हर० ॥  
 तस्मिँल्ललितसुदेशे शाला मणिरचिता।  
 तन्मध्ये हरनिकटे गौरी मुदसहिता ॥  
 क्रीडा रचयति भूषारज्जित निजमीशम्।  
 इन्द्रादिक सुर सेवत नामयते शीशम् ॥ ३ ॥ ॐ हर० ॥  
 बिबुधबधू बहु नृत्यत हृदये मुदसहिता।  
 किन्नर गायन कुरुते सप्त स्वर सहिता ॥